Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बैगा जनजाति की नृत्य कला : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन(बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राम कुमार उसरेठे*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, चौरई, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश जनजाति बहुल राज्य है। बैगा मध्य प्रदेश की एक प्रमुख आदिम जनजाति है। यह मध्य प्रदेश के डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, अनूपपुर एवं शहडोल जिलों में निवास करती है। बालाघाट जिले की बैहर तहसील की बैगा जनजाति अपनी आदिम संस्कृति के कारण समाजशास्त्रियों के अध्ययन का केंद्र रही है। इसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा आश्चर्य चकित करने वाली है।इनके नृत्य भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के आधार स्तंभ है। पिछले तीन–चार दशकों में संचार,बढ़ती आवागमन गतिविधियाँ, शहरीकरण एवं उद्योगिकरण के प्रभाव से इस क्षेत्र की लोक संस्कृति में अनेक परिवर्तन हुए हैं। बावजूद इसके बैगा जनजाति ने अपने लोक नृत्यों को संरक्षित कर रखा है। बैगा जनजाति संस्कृति की निरंतरता के लिए उनके नृत्यों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना आवश्यक है।

शब्द कुंजी – बैगा जनजाति, नृत्य कला।

प्रस्तावना – मध्य प्रदेश की आदिम संस्कृति संपन्न जनजातियों में बैगा जनजाति प्रमुख है। बैगा जनजाति बालाघाट जिले की बैहर तहसील के वन ग्रामों में निवास करती है।प्रस्तुतअध्ययन इन्हीं ग्रामों में किए गए अवलोकन पर आधारित है।

नृत्य, खुशी एवं उल्लास की अभिव्यक्ति का एक रूप है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण इस समाज विशेष में नृत्य के विभिन्न रूप है। नृत्य कुछ विशेष अवसर पर किये जाते है। बैगा जनजाति ने प्रकृति की गोद में रहते हुये कुछ विशेष नृत्यों को विकसित किया है। नृत्य करते हुये ये लोग अपने सारे अभावों को भूल जाते है। नृत्य बैगा जीवन में आनंद और उमंग के साथ मनोरंजन का प्रमुख साधन है। नृत्य का रस जीवन में स्फूर्ती भर देता है। बैगाओ के सभी नृत्य प्रकृति एवं उनके जीवन की अभिव्यक्ति है। बैगा नृत्य करते समय विशेष वेशभूषा एवं श्रृंगार करते है। इन नृत्यों में महिला एवं पुरुष दोनों ही भाग लेते है। प्रत्येक नृत्य के समय विशेष गीत गाये जाते है। नृत्य के समय बैगा समाज द्वारा स्वनिर्मितवाद्ययंत्रों को बजाया जाता है।

'बैगा वर्ष भर नाचते गाते है। इनके नृत्य दशहरापर्व से शुरू होते है और वर्षारंभ तक चलते है।श्रृंगार करके बैगा युवक युवतियों नृत्य करते है। बिना श्रृंगार के किसी को नृत्य में सम्मिलित नहीं किया जाता है।'[1]

'बैगाओं के नृत्य सामूहिक नृत्य है, कोई भी नृत्य एकल या युगल के रूप में नहीं किया जाता है। बैगा त्यौहार, उत्सव, विवाह आदि केअवसर के अतिरिका भी सामान्य दिनों मेंनृत्य करते है। अधिकांश नृत्यों में एक गाँव के पुरुष और दूसरे गाँव की स्त्रियों सम्मिलित होती है।'[2]

'बैगा पर्व त्यौहारों, शादी विवाह व उत्सव आदि में उन्मुक्त होकर नृत्य करते है। नृत्य और गीत ही बैगाओं को ऐसी आसाधारण परिस्थिति में जीने की प्रेरणा और उत्साह देते है। बैगा लोग वर्ष भर नाचते गाते हैं। नृत्य इनको संवेगात्मक उल्लास पूर्ण जीवन की संवेदनशील अभिव्यंजना है। इनके नृत्य सामूहिक होते है।'[3]

'युवतियां काफी सजधज कर नृत्य करती है। कोई भी युवक या युवती बिना श्रृंगार किये नृत्य नहीं करता है। वे लोग नृत्य के काफी शौकीन है।'[4] शोध के दौरान यह पाया गया कि बैगा समाज में नृत्य की एक समृद्ध परम्परा है। इनके नृत्य में जीवन की वास्तविकता का बोध होता है। विपरीत प्राकृतिक परिवेश में जीते हुये भी इन्होंने अपने लिये नृत्य जैसे विशिष्ट सांस्कृतिक पक्ष को न केवल जन्म दिया बल्कि उसका विकास भी किया। इनके द्वारा किये जाने वाले नृत्यों की भाव–भंगिमा वं नियमबद्ध प्रदर्शन देखने वाले को रोमांचित कर देता है। नृत्य के समय बैगा पुरूष एवं महिलाये विशेष वेशभूषा एवं आभूषण पहनती है। सामूहिक रूप से नृत्य किया जाता है। विभिन्न अवसरों पर अलग अलग नृत्य किये जाते है। कुछ अवसरों पर दूसरे गांव का नर्तन दल आता है और उसके साथ स्थानीय गाँव का नर्तन दल नृत्य करता है। जब एक गाँव में किसी दुसरे गाँव का नर्तन दल आता है तो गाँव का मुकद्दम उनका टीका करके उनका स्वागत करता है बाद में उन्हें भोजन कराया जाता है और कभी–कभी मद्या भी परोसी जाती है। रात्रि में एक मैदान पर रोशनी की जाती है। और वहीं पर नृत्य किया जाता है। ठंडी से बचने के लिये नृत्य स्थल पर ही आग जला ली जाती है। मेहमान नर्तन दल नृत्य स्थल पर पहुंचकर मेजवान गाँव के नर्तन दल की प्रतिक्षा करते है। जैसे ही मेजवान गाँव का नर्तन दल मैदान में पहुंचता है वैसे ही मेहमान नर्तन दल तेजी से नृत्य करना आंरभ कर देते है, यह देखकर मेजवान नर्तन दल भी उनके साथ घेरे में तेजी से नृत्य करना आंरभ कर देता है। इसे परधौनी की रस्म कहा जाता है। परधौनी के बाद बीच–बीच में रुक रुककर पूरी रात नृत्य किया जाता है। दूसरे दिन भोजन एवंमद्या परोसकरउन्हें नेग के रूप में कुछ रूपये देकर विदा कर दिया जाता है। मेजवान नृत्य दल बाद में मेहमान नृत्य दत्त के गाँव में जाकर नृत्य करता है। यह क्रम प्रतिवर्ष चलता रहता है।

नृत्य की वेशभूषा एवं आभूषण–बैगा पुरुष नृत्य के समय कमर में लहंगे जैसा घेरेदार साया, कमीज एवं काली बण्डी (जाकेट) पहनते है। फाग नृत्य को छोड़कर बाकी सभी नृत्यों में सिर पर पगड़ी के साथ मोरपंख लगाये जाते है। गले में विभिन्न रंगो की मूंगा मालायें, व सिक्को की हमेल पहनते है। कानों में बाली और पैरो में लोहे वपीतल की घुंघरू लगी पैजन पहनते है। पीठ पर लाल नीली छींट का पिछौरा बांधा जाता है। हाथ में 'ठिसकी' (एक बांसुरीनुमावाध) रखते है।

स्त्रियां नृत्य के समय मूंगा धोती पहनती है। बालोंको विशेष रूप से सवारा जाता है। बालों में चिमटियाँ लगाई जाती है तथा बगाई घास से बनी श्लाछागुच्छा जूड़े से बाधकर कमर तक लटकाया जाता है। जूड़े ने मोरपंख की कलगी बांधी जाती है। गले में माला व सुतिया पहनी जाती है। माथे पर रंगीन डोरी बांधी जाती है। पैर की अंगुलियों में छुटकी एवं पैरो में पैजन पहनती है। कलाई चूड़ियों के अलावा 'गुजरी' और 'हरैया' पहनी जाती है।

प्रमुख नृत्य–शोध के दौरान अध्ययन क्षेत्र की बैगा जनजाति के निम्न प्रमुख नृत्यों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई।

दशहरा नृत्य–यह नृत्य दशहरा के अवसर पर किया जाता है दशहराके दिन से प्रत्येक दिन यह नृत्य होता है, यह क्रम दीवाली तक चलता है। वर्षा ऋतु के लगभग समाप्त होने एवं शीत ऋतु के पहले का यह मौसम सुखद होता है, ऐसे मौसम में त्यौहारों का आना नृत्य को और भी अधिक मोहक बना देता है। यही कारण है की यह नृत्य रात में किया जाता है, यह नृत्य टोलियों में मिलकर किया जाता है। महिला एवं पुरुषों की अलग–अलग टोलियाँ होती है, ये दोनो टोलियाँ मिलकर नृत्य करती है। एक गाँव की नृत्य टोली किसी दूसरे गाँव नृत्य करने जाती है। किसी गाँव की नृत्य टोली जब दुसरे गाँव नृत्य करने जाती है और वह पुरुषों की टोली है तो उस गाँव की महिला टोली उनके साथ नृत्य करती है। यदि महिला टोली नृत्य करने आती है तो मेजबान गाँव की पुरुष टोली उनके साथ नृत्य करती है। इस नृत्य के समय बिलमा गीत गाया जाता है।

युवा महिला एवं पुरुषों कि टोली के साथ साथ नृत्य करने से ये लोग विवाह हेतु अपने जीवन साथी का चुनाव कर लेते है। यह अवसर जीवन साथी के चयन हेतु उपयुक्त होता है। यह नृत्य बैगाओ के उल्लास एवं आनंद की अभिव्यकित का माध्यम है।

करमा नृत्य–अध्ययनित ग्रामों में पाया गया की बैगाका प्रमुख नृत्य करमा है। करमा का अर्थ है 'कर्म की पूजा'। इस नृत्य के समय गाये जाने वाले करमा गीतोंमें दैनिक कार्यों का वर्णन अधिक होता है. इसलिये इसे करमा नृत्य कहते है। यह नृत्य प्रतियोगिता के रूप में पुरुष व स्त्रियों की टोलियों के बीच किया जाता है। इस नृत्य के लिए एक गाँव से नृत्य टोली दूसरे गाँव जाती है। गाँव के स्त्री पुरुष मिलकर भी करमा नृत्य करते है। गोल घेरे में पंक्तिबद्ध रूप में नृत्य किया जाता है, बीच में माँदर और टिमकी वादक इन्हें कमर में बाधकर बजाते है और साथ ही खड़े होकर नाचते है। नगाड़ावादक एक तरफ बैठकर नगाड़ा बजाता है। महिलायें अपने हाथ में ठिसकी रखती है, जिसे वे लय के साथ बजाती है। एक टोली गीत की कड़ी उठाती है और दूसरी टोली उसे दोहराती हुई नृत्य करती है। करमा नृत्य के समय स्त्री पुरुष विशेष वेशभूषा पहनते है। महिलाए वादक के आसपास घूम–घूम कर, कमर पर हाथ रखकर, थोड़ासा झुककर एक हाथ से नृत्य के गीत के बोलो के अनुसार हाव–भाव प्रकट करते हुए, मध्यम गति के साथ नृत्य करती है। कभी–कभी पुरुष एवं महिलांए पक्तिवद्ध होकर भी नृत्य करते है। करमा नृत्य में ताल और पद गति के अनुसार विभिन्न प्रकार दिखाई देते है।

करमा खाप–इस नृत्य में बैगाओ द्वारा किये जाने वाले कार्यों जैसे लकड़ी काटने के लिये एवं वनोपज संग्रहण करने के लिए पहाड़ों पर चढ़ना व उत्तरना पड़ता है। इनकार्यों को नृत्य के माध्यम से दर्शाया जाता है। इस नृत्य में पहाड़ों पर चढ़ते वक्त सम्मलकर पैरो को जमाकर कैसे चलते है, उसे दर्शाया जाता है। नृत्य टोली पक्तिवद्ध होकर आगे पीछे चलते हुयें पैरो को एक लय में जमाकर आगे पीछे होकर नृत्य किया जाता है। खाप का अर्थ है श्पैर जमाना इसलिये इसे करमा खाप नृत्य कहा जा सकता है।

करमा खरी– बैगाओं द्वारा पहाड़ो पर चढ़ने के बाद वापस उतरने समय पैर तेजी से अपने आप आगे बढ़ते है। इस भाव को करमा खरी नृत्य के माध्यम से दर्शाया जाता है। इस नृत्य में टोली पंक्तिबद्ध रूप में पहाड़ो से उतरने वाली क्रियाओं को लयबद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं।

करमा झूमर–यह नृत्य प्रकृति की क्रियायों को दर्शाता है। जिस प्रकार हवा के चलने से हरे–भरे वृक्षों की डालियां झुकती है व फिर ऊपर उठती है, इसी प्रकार करमा झूलनी नृत्य में बैगा नर्तकों का शरीर झुककर फिर ऊपर उठता है। यह नृत्य झूम झूम कर किया जाता है इसलिये इसे करमा झूमर नृत्य कहते है।

करमा लहकी– इस नृत्य में बैगा स्त्री एवं पुरुष टोलियाँ एक पंक्तिबद्ध होकर करते है। नर्तकों का कमर से ऊपर का शरीर नृत्य के दौरान बार–बार झुकता और उठता है। इस नृत्य को देखकर ऐसा लगता है कि नृतक जानंद और उल्लास में डूबकर कर नृत्य कर रहा है, इसलिए इसे करमा लहकी नृत्य कहते है। यह नृत्य विजय दशमी से वर्षा आरंभ होने तक किये जाते है।

करमा झुलनी– इस नृत्य मेनृत्यक पंक्तिबद्ध होकर शरीर को ऊपर उठाकर फिर नीचे झुका लेते है। झूमर नृत्य की तुलना में लोच कम हो जाता है। इस नृत्य में मांदर वादक बीच–बीच में उमंग में आकर मृग(हिरन) जैसे उछल कर महिला नर्तकियों के सामने आ जाता है और कभी बैठकर कभी झुककर विभिन्न मुद्राओं में मांदर बजाते है।

झरपट– 'झरपट' शब्द का अर्थ होता है छेड़–छाड़। इस नृत्य में महिला एवं पुरुष अलग–अलग पंक्तियों में आमने–सामने होते है। दोनो पक्ति केनर्तकों के हाथों में ठिसकी होती है। गीतों में सवाल जवाब के रूप में झरपट (छेड़–छाड़) होती है। इस नृत्य के दौरान पूरे वातावरण में हास्य का माहौल बन जाता है।

रीना नृत्य– इस नृत्य कोकेवल महिलाये ही करती है। महिलाये दो टोलियों में आमने सामने, पक्तिबद्ध होकर नृत्य करती है। कभी कभी आमने समाने गोल घेरे में भी नृत्य किया जाता है। नृत्य के दौरान महिलाये अपने हाथों से चुटकी बजाती है. साथ ही मांदर और टिमकी बजती रहती है।

बिलमा नृत्य–यह नृत्य मुख्यत: विवाह के अवसर पर किया जाता है। इसे बिरहा नृत्य भी कहा जाता है। जब गाँव में बारात को विदाई दी जाती है तब यह नृत्य किया जाता है। युवक–युवतियों मिलकर यह नृत्य करते है। पुरुष अपेक्षाकृत अधिक उछल–उछल कर उल्लास के साथ नृत्य करते है। जबकि युवतियों मंद गति से कदम आगे पीछे करके नाचती है। नृत्य में युवक व युवतियों के भावों में अंतर का मुख्य कारण पुरुष नृत्य में उल्लास होता है क्योकि यह दुल्हन को लेकर जा रहे है जबकि युवतियों के भाव में विछोह दिखाई देता है।

भड़ौनी नृत्य–यह विवाह के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है। इस नृत्य के साथ स्त्रियों समधियों के लिये गालियों गाती है। जब बारात विवाह

मंडल में आ जाती है, तब महिलायें इस नृत्य को करती है।

परधौनी नृत्य–यह विवाह के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है। बारात केआगमन पर उसके स्वागत के लिए नृत्य किया जाता है। वधु के गाँव के पुरुषों द्वारा नृत्य किया जाता है। इसी दौरान वर एवं वधु पक्ष के सभी लोग मुकद्दम या वधु के आंगन में इकट्ठा हो जाते है। गाँव से दो चारपाई मांगकर लाई जाती है। इन चार पाईयो को आपस में त्रिकोण की स्थिति में बाँधकर खड़ा किया जाता है। फिर इसे हाथी का आकार देने के लिए इसमे दो बांस के बने सुपे बाधे जाते है जो हाथी के कान होते है। घास को लम्बे आकार में बाधकर हाथी की सुंड एवं पूंछ बनाई जाती है। चारपाई पर चादर या कंबल डाल दिया जाता है। यह हाथी वर पक्ष के लोग बनाते है। मैदान या आंगन के एक तरफ वर एवं दूसरे तरफ वधु पक्ष के लोग खड़े हो जाते है। अब इस हाथी पर बराती एवं वधु के भाइयों को बिठाते है एवं नृत्य करते है।

निष्कर्ष– बैगा प्रकृति के गोद में निवासरत वह जनजाति समुदाय है, जिसने आदिकाल से ही अपनी लोक संस्कृति में नृत्य को शामिल किया है।नृत्य न केवल उनमें उत्साह के प्रतीक हैं बल्कि यह सामाजिकता एवं समुदायिकता के भाव को भी लिए हुए हैं। बैगा जनजाति के नृत्य इनकी समृद्ध संस्कृति के प्रतीक हैं। विभिन्न अवसरों पर किए जाने वाले नृत्य जनजाति चेतना एवं उत्साह को बढ़ाते हैं। जनजाति संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखने में बैगा जनजाति के इनलोक नृत्यों का विशेष महत्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. निरगुणे, बसंत (2006) 'बैगा' (संपदा) आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल पृ.क्र.183
2. मिश्रा शिवाकांत (2002)'मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति में सामाजिक, सांस्कृतिक, परिस्थितिकीय परिवर्तन एवं सामांजस्य की समस्याएँ' शोध प्रबंध, बानीस महूपृ.क्र.185
3. दुबे, रश्मि (2005) 'बैगा जनजाति, सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन' गुप्ता पब्लिशर नागपुर पृ.क्र.149
4. पटेल जी.पी. (1992) 'बैगा जनजाति का मानव समाजशास्त्रीय अध्ययन' बुलेटिन ऑफ द ट्राईबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट भोपाल पृ.क्र.36

****